BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

B.A Part III History (Hons) VIIth Paper.

Q. 1917 ई० की बोल्शेविक क्रांति के कारणों पर प्रकाश डालिए।

Ans 1917 ई० की रूसी क्रांति को 20 वीं सदी के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। रूसी क्रांति ने विश्व को एक नवीन विचारधारा प्रदान की, जिसे साम्यवाद कहा जाता है। इस क्रांति के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कारण हैं।

(1) व्यवसायिक क्रांति का प्रभाव – व्यवसायिक क्रांति के फलस्वरूप रूस में बड़े-बड़े कल-कारखानों की स्थापना हो चुकी थी। इनमें काम करने वाले हजारों श्रमिक गाँवों तथा कस्बों से आकर कारखानों के निकट नगरों में निवास करने लगे थे और राजनीतिक मामलों में भी रुचि लेने लगे थे तथा उन लोगों ने अपना क्लब भी स्थापित कर लिया और जिसमें मार्क्स के साम्यवादी सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए क्रांतिकारी नेता भी आने लगे थे, उनके साम्यवादी विचारों में श्रमिकों ने भी रुचि लेनी शुरू कर दी थी। धीरे-धीरे श्रमिकों ने अपने भविष्य को सुन्दर बनाने उद्देश्य से साम्यवादी दल में शामिल होने लगे थे।

फिशर महोदय के अनुसार– "इस साम्यवादी प्रचार ने देश के श्रमिकों में जारशाही के प्रति घोर असंतोष एवं घृणा उत्पन्न कर दी जिसके कारण लोग जार के शासन का अंत करने के लिए क्रांतिकारियों का साथ देने लगे।

(2) 1905 ई० की क्रांति का प्रभाव - 1905 ई० में रूस के देश भक्तों ने राष्ट्रीयता की भावना से

प्रेरित हो कर अपनी स्वाधीनता के लिए जारशाही के विरुद्ध क्रांति कर दी थी। यद्यपि उन्हें अपने उद्देश्यों में सफलता नहीं मिल सकी थी, फिर भी रूसी जनता को अपने राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान हो गया था और वह जारशाही को मिटा कर रूस में वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना करने को इच्छुक हो गई थी।

(3) पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव — पश्चिमी यूरोप के राज्यों की लोकतांत्रिक विचारधारा का भी रूसी जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा था। रूस एक अविकसीत देश था, जहाँ पर समाजिक एवं आर्थिक विषमता व्याप्त थी और निरंकुश राजतंत्र का प्रभुत्व था। ऐसे देश में पाश्चात्य विचारों के प्रभाव के फलस्वरूप जनता में स्वतंत्रता एवं समानता की भावना बलवती होने लगी थी।

(4) यूरोपीय लोकतंत्र का प्रभाव — प्रथम विश्व युद्ध आरंभ होने पर रूस, इंगलैंड और फ्रांस साथी बन कर त्रिगुट राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ने लगा था। इंगलैंड और फ्रांस बार-बार यह घोषणा कर रहे थे कि वे राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रक्षा के लिए जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी तथा तुर्की के विरुद्ध युद्ध में लड़ रहे हैं। ~~क्योंकि~~ उन्होंने अपने इन सिद्धान्तों का युद्ध के दौरान व्यापक प्रचार किया। अतः इस प्रचार का रूसी जनता पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और वह रूस के जार निरंकुश एवं अत्याचारी शासक से मुक्ति पाने की योजना

बनाने लगी और देश में लोकतंत्र की स्थापना करने की अभिलाषा रखने लगी।

(5) **बौद्धिक क्रांति** — रूसी विद्वानों के ग्रंथों एवं विचारों ने रूस के शिक्षित मध्यम वर्ग के लोगों के मस्तिष्क में क्रांतिकारी भावना भर दी और वे राजनीतिक सुधारों की माँग करने लगे। कुछ रूसी विचारक पक्के शून्यवादी बन गए और तत्कालीन रूसी व्यवस्था का विनाश करके अपने ढंग पर व्यवस्था करने की योजना बनाने लगे। इस प्रकार रूस में क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार होने लगी थी।

(6) **जार निकोलस द्वितीय की अयोग्यता** — रूस का जार निकोलस II बड़ा अंधविश्वासी और अयोग्य शासक था। विन्सर के अनुसार — निकोलस II दुर्बल और हठी स्वभाव का मंदबुद्धि व्यक्ति था, जिसमें घटनाओं के महत्व और व्यक्तियों के चरित्र को समझने की शक्ति नहीं थी। अतः जार निकोलस II की अयोग्यता रूसी क्रांति का एक प्रमुख कारण बनी।

(7) **भ्रष्ट और निरंकुश शासन** — रूस का शासन बड़ा भ्रष्ट और निकम्मा था। जारशाही के अधिकारी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जनता पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे और उनका बुरी तरह शोषण करते थे। अतः रूसी जनता में जार के भ्रष्ट और अकुशल शासन के विरुद्ध घोर असंतोष उत्पन्न हो गया था और वह जारशाही को नष्ट कर देने के लिए दृढ़ संकल्प हो चुकी थी।

सरकार की अयोग्यता और मूर्खतापूर्ण कार्यों ने रूसी क्रांति का विस्फोट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। सरकार की अयोग्यता के कारण ही 1904 ई० में टैननबर्ग और फरवरी 1905 ई० में मंचूरियन के युद्ध में रूसी सेनाओं को पराजय का मुंह देखना पड़ा। लाखों रूसी सैनिक मारे गए और एक लाख रूसी सैनिक बंदी बना लिए गए। रूसी सेना के पराजय का मुख्य कारण युद्ध सामग्री का अभाव और सरकार का भ्रष्ट प्रबंध था। इससे जार के शासन के विरुद्ध जनता में व्यापक असंतोष उभरने लगा। देश की आर्थिक व्यवस्था भी चरमरा गई और हर स्थान पर रोटी-रोटी की पुकार मचने लगी।

देश की इस भीषण स्थिति में सशंक होकर कुछ अर्थविदों की एक कमीशन ने स्थिति का गहरा अध्ययन किया और जार से अपनी को अपनी रिपोर्ट देकर निवेदन किया कि- देश में अनाज और कपड़ा प्रचुर मात्रा में विद्यमान है परन्तु कुप्रबन्ध और अव्यवस्था के कारण वह चोर बाजार में जा रहा है। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले। स्थिति को तत्काल सुधारने का प्रबंध करें। इसके बाद फरवरी 1917 ई० में मास्को में बुद्धिजीवियों का एक सम्मेलन हुआ। जिसमें ड्यूमा के अधिवेशन को तत्काल बुलाए जाने

की माँग की गई परन्तु जार और उसके भ्रष्ट दरबारी अपनी विलासिता में लिप्त रहे और इन्होंने लोगों की माँगों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

फलस्वरूप 7 मार्च 1917 ई० को पेट्रोग्राड में रूसी क्रांति का पहला विस्फोट हो गया।

——— X ———